03. दादी जी के महावाक्य

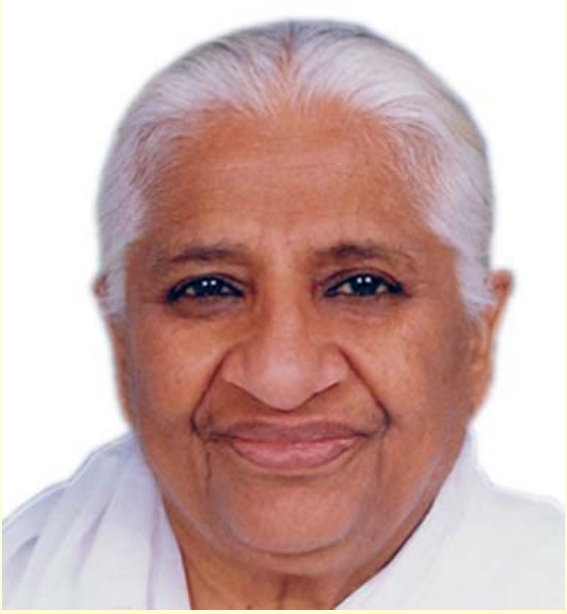

हम ब्राह्मणों का आहार–विहार है सबका सुनना, सबका समाना, सबका सहन करना और सबको स्नेह देना। सबको सहन कराना, यह हमारा आहार नहीं है। सहन करना सीखो, सहन कराना नहीं। दृढ़ संकल्प करो। ऐसे नहीं, क्या करें, धारणा नहीं होती। हम निर्बल नहीं, हम तो महा बलवान बच्चे हैं।

हमें दुआओं का हार चाहिए। यही फूलों का हार है। जो यह हार पहनता है वही बाबा के गले का हार है। मुझे स्नेह की शक्ति सदा साथ रखनी है, वैर की नहीं प्यार के सागर के प्यार में भरे हुए हम रत्न हैं। प्यार को छोड़कर हमें मटके नहीं सुखाने हैं। जहाँ प्यार है, वहाँ मटके भर जाते हैं। जहाँ वैर है, वहाँ भरे हुए मटके भी सूख जाते हैं।

बाबा ने हम ब्राह्मणों के लिए जो विधि–विधान बनायें हैं उनको सदा कायम रखना है। दृढ़ संकल्प करो तो पुरानी बातें सब समाप्त हो जायेंगी। जहाँ संकल्प दृढ़ है वहाँ सब बातों में विजय है। हरेक अपनी प्रवृत्ति को मिनी मधुबन बनाओ। मधुबन जैसी दिनचर्या बनाओ। ऐसा अपना वातावरण बनाओ।

बाबा कहता है परचिंतन परतन की जड़ है। मुझे सदा स्व–चिंतन में, स्व–धर्म में रहना है। हम किसी की चिंताओं से चिंतित क्यों हो? चिंताओं की चिता क्यों बनायें?

अगर ज्ञान में आने से कोई आपको रोकता है तो ऐसा रहमदिल नहीं बनो कि उसके कहने से रुक जाओ। लेकिन उसके प्रति भी शुभ भावना रहे कि यह आज नहीं तो कल बाबा का बन ही जायेगा। दया का मतलब है कि मुझे अपने पुराने संस्कारों के वश किसको दर्द नहीं देना है। हम सब दुःख–दर्द हरने वाली देवियाँ हैं/देव हैं। हमें हारना नहीं है, हराना है। यह पाठ पक्का हो तो सबके प्रति प्रेम की, दया की स्नेह की भावना रहेगी। स्नेह के सागर में डूबे हुए हीरे–मोती रहेंगे। नफ़रत नहीं आयेगी। दया करने से उनका कल्याण होगा, नफ़रत से नहीं। हम रहमदिल बाप के रहमदिल बच्चे हैं इसलिए नफ़रत कर नहीं सकते।

आप सब देव और देवी हो। आपकी दया ही बाबा की दया है। आप देवों की हमें दया चाहिए। इन देवों की दया हो तो मैं राजाओं का राजा बनूँ। देव बना ही तब है जब सब देवों ने दया की है। हमें सर्व के स्नेह की, आशीर्वाद की दृष्टि मिलती रहे। यही मेरा पुरुषार्थ है।

अच्छा, ओम् शांति।